कछुआ उड़ा हवा में

एक था कछुआ। उसे घूम फिर कर चीज़ें देखने और बातें करने में बहुत मज़ा आता था।

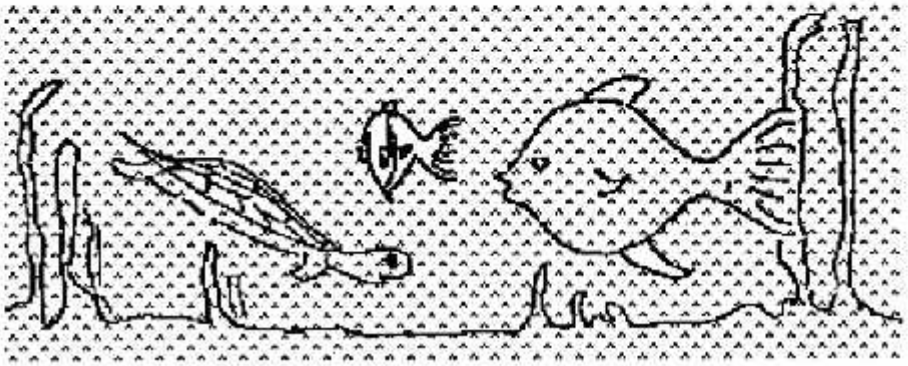

वह पानी के अंदर मछलियों से मिलता था। कहता - दैया रे! तुम लोग तो बहुत सुनहरी और चौड़ी सी लग रही हो। ज़रुर ये लंबी लंबी-घासों का ही कमाल है।

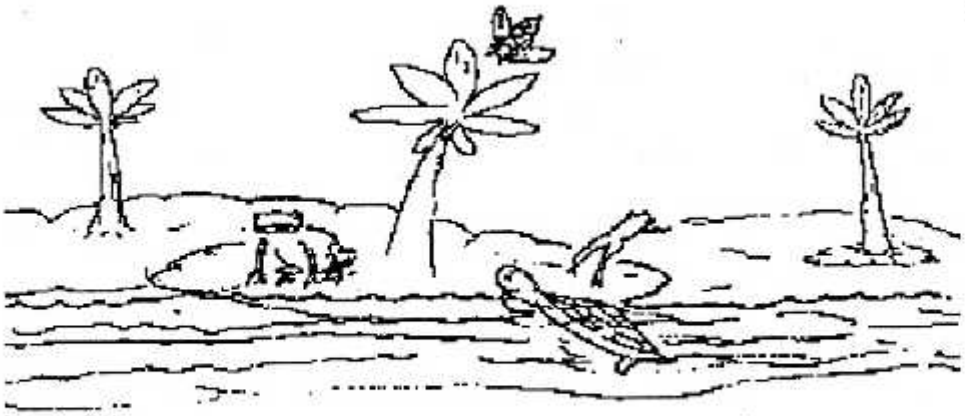

कभी वो कमल के फूलों के पास मेंढकों से बातचीत करता - दैया रे! कितने सुंदर और लंबे हैं ये कमल के फूल। बहुत मज़ा आता है।

सांप मिलता तो सांप से कहता - दैया रे! तुम तो लंबी घास में दिखाई ही नहीं देते।

एक दिन उसने पेड़ पर बगुलों के एक जोड़े को घोंसले में देखा तो कहा - दैया रे! कितना ऊंचा है तुम्हारा घर। तुम्हें चक्कर नहीं आते।

बगुलों ने कहा - नहीं। हम तो इससे भी ज़्यादा ऊपर उड़ते हैं। वहां भी सिर नहीं चकराता।

कछुए ने कहा - काश, मैं भी उड़ सकता। कितना मज़ा आता उड़ते-उड़ते दुनिया देखने में।

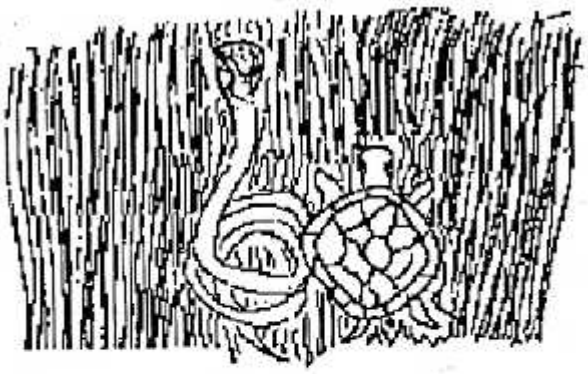

बगुलों ने कहा - उड़ तो सकते हो। एक तरीका है जिससे तुम हमारे साथ उड़ सकते हो।

कछुआ बहुत खुश हुआ। बोला - सच? दैया रे, मैं उड़ पाऊंगा?

बगुलों ने कहा - हां, लेकिन एक शर्त है, तुम्हें अपना मुंह बंद रखना होगा।

कछुआ बोला- हां हां, मैं कुछ भी करने के लिये तैयार हूं।

बगुले एक लंबी सी लकड़ी लेकर आये। उन्होंने कहा –

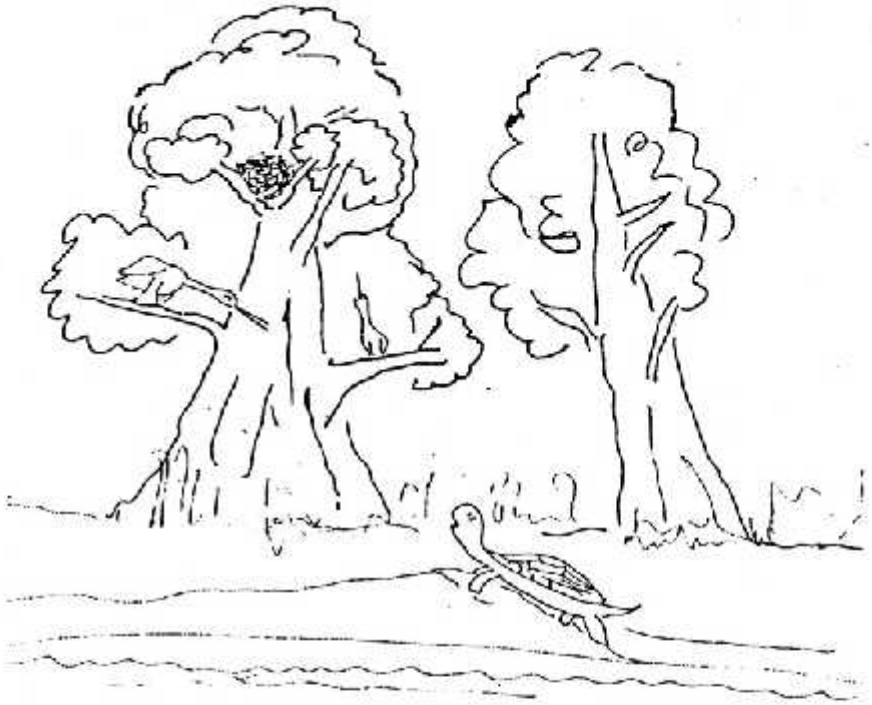

तुम इस लकड़ी को बीच से अपने मुंह में पकड़ लो। हम इसके दोनों छोर अपने मुंह में पकड़ कर उड़ेंगे। हम उड़ेंगे तो तुम भी उड़ोगे। लेकिन अगर तुमने ज़रा भी बात करने की कोशिश की और तुम्हारा मुंह खुला तो तुम धड़ाम से नीचे आ जाओगे।

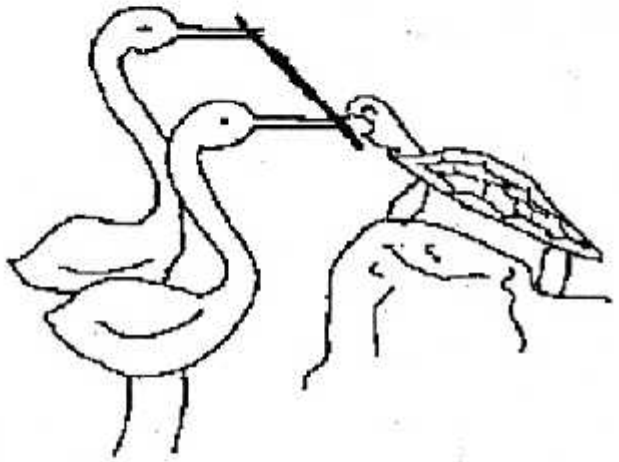

कछुआ बोला - हां हां, पर चलो उड़ें तो सही। चलो, चलो।

तीनों ने लकड़ी मुंह में पकड़ ली और उड़े। कछुए ने टंगे-टंगे ही आंखें नीचे कर के देखा।

अरे वाह। मछलियां तो ऊपर से पतली सी लग रही थीं। क्या ये सचमुच वही मछलियां थीं?

और वो घास तो पता नहीं कैसी दिख रही थी। कछुआ बगुलों को ये बताने ही जा रहा था कि उसे याद आ गया कि अभी उसे चुप ही रहना है।

वे तीनों और ऊपर उड़े। कछुए ने देखा कि कमल के फूल चौड़े-चौड़े से दिख रहे थे। और उनकी डंठलें तो नज़र ही नहीं आ रही थीं। मेंढक भी कुछ अलग लग रहे थे। वो फिर से बगुलों को ये सब बताने ही वाला था कि उसे फिर याद आ गया और उसने मुंह बंद रखा।

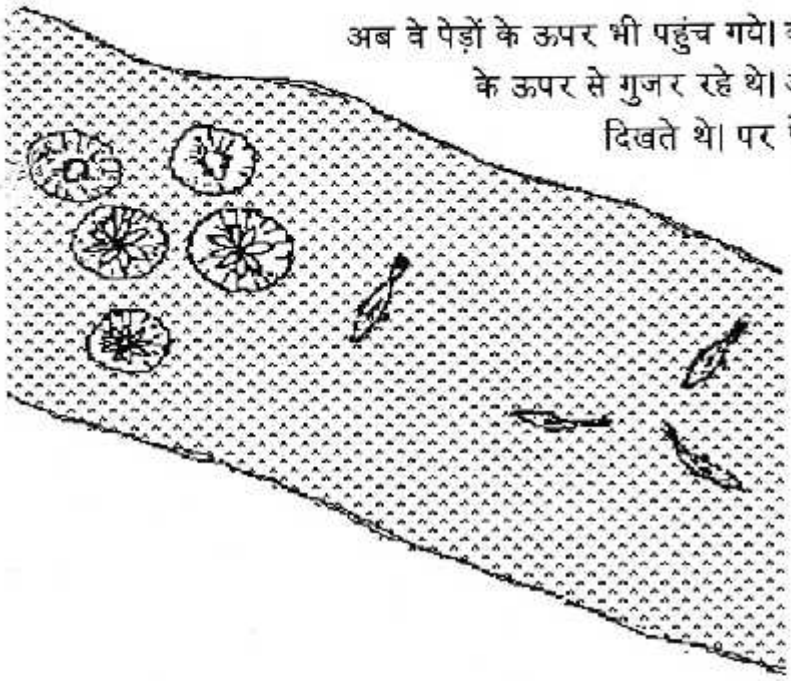

अब वे पेड़ों के ऊपर भी पहुंच गये। वहां से कछुए ने देखा कि वो बगुलों के घोंसलों के ऊपर से गुजर रहे थे। अब तो उसे अंडे भी दिख रहे थे जो पहले नहीं दिखते थे। पर पेड़ का तना नज़र ही नहीं आ रहा था।

अचानक उसने देखा कि सांप, जो लंबी घास में आसानी से दिखाई नहीं देता था, एकदम साफ-साफ नज़र आ रहा था। उससे रहा न गया।

दैया रे! वो चीखा। आगे का वाक्य तो उसके मुंह में ही रह गया। क्योंकि जैसे ही उसका मुंह खुला, लकड़ी छूट गई और कछुआ नीचे गिरने लगा।

छपाक! कछुआ पीठ के बल पानी में जा गिरा।
उसकी कड़ी पीठ को ज़्यादा चोट नहीं आई। उसने सोचा चलो बच गए। फिर वह घूर-घूर के चारों और देखने लगा। सब कुछ फिर से वैसा का वैसा ही दिख रहा था जैसा पहले दिखता था। वह मछली को ढूंढ़ने चला।

1. कछुए ने ऊपर उड़ते हुए क्या-क्या देखा?

_____

_____

2. इनमें से कौन सी चीजें ऐसी हैं जो उसे ऊपर से नही दिखतीं? गोला लगाओ

घास, डंठल, पानी, अंडे, तना, मेंढक, कमल

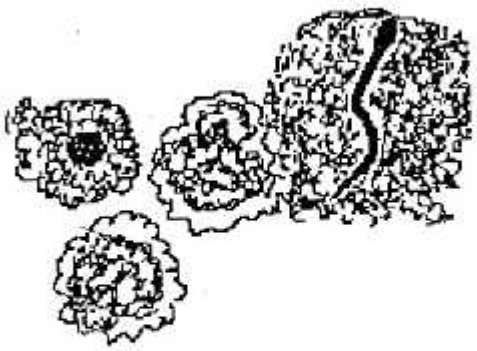

3. कौन सी चीजें ऊपर से नहीं दिख रहीं थी जो नीचे से दिखती हैं?

_____

_____

4. कछुआ अगर तुम्हारे मोहल्ले के ऊपर से गुजरता तो तुम्हारा घर उसे कैसा दिखता?

तुम्हारा स्कूल कैसा दिखता? कापी में चित्र बनाओ।

5. क्या कुछ ऐसा हो सकता है जिससे कछुआ उड़ भी ले और बात भी कर पाए?

6. कछुआ पानी में वापस पहुंच कर मछलियों को अपनी यात्रा के बारेमें क्या-क्या बताएगा। अपनी कापी **में** लिखकर दोस्तों को पढ़वाओ।

7. कहानी में आए चित्रों में इन सब को ढूंढो :-

मछली, मेंढक, कमल, घोंसला, बगुले, सांप, अंडे, घास, कछुआ।

ढूंढ कर सभी चित्रों में इनके नाम इन्हीं के चित्र के नीचे लिखो।

8. कछुआ किन-किन से मिलता था?

9. कछुआ कैसे उड़ा? ----------

10. नीचे दिए पैराग्राफ में मोटे लिखे शब्दों को ध्यान से पढ़ो।

जैसे ही उसका **मुंह खुला**, लकड़ी **छूट** गई। **कछुआ** पीठ के बल पानी में जा **गिरा**। छपाक की आवाज़ हुई। कछुए की कड़ी पीठ को ज़्यादा **चोट** नहीं आई। **उसने** चारों ओर देखा तो **पाया** कि सब-कुछ पहले जैसा ही दिख रहा था।

अब तुम यहां दिए शब्दों या शब्दों के समूह में से चुनकर नीचे दिए पैराग्राफ में खाली स्थान **भरो**:-

बगुले, रहते थे, काट दिया, गई, रहता था, फंस गई, रोहु, बिछाया, रहती थी।

एक तालाब के किनारे एक बगुला ---------- । उसी तालाब में एक बड़ी रोहु मछली भी ---------- । बगुले और रोहु के बीच बहुत गहरी ---- । दोनों हमेशा साथ-साथ ---------- । एक दिन एक मछुआरे ने तालाब में अपना जाल ---- । ---- जाल **में** ---------- । ---------- ने अपनी नुकीली चोंच से जाल ---------- । रोहू अब आजाद हो ---- ।

आओ, कुछ और अभ्यास करें :

1. चित्र बनाओ

पानी में कछुआ　　उड़ता हुआ कछुआ　　दौड़ता हुआ कछुआ

2. *"हाँ हाँ पर चलो उड़ें तो सही। चलो चलो।*

कहानी में देख कर बताओ, ये बात किसने कही? ---------- किससे कही? ------

'हाँ हाँ' किस बात के लिए कहा? ----------

इस बात को कहने के बाद कहानी में क्या होता है? ----------

---

3. कछुए ने बगुलों को कहाँ देखा था? ----------

कछुए और बगुलों में क्या बातचीत हुई, अपने शब्दों में लिखो। ----------

---

---

4. **कहानी का सार लिखना। कहानी की इन मुख्य बातों को लेकर इसे छोटा बनाकर लिखो ;**

कछुआ (घूमने, बात करने में मज़ा आता था) / बगुलों से बातचीत / उडने की शर्त / उड़ते समय मछलियाँ, कमल, घास, साँप अलग दिख रहे थे / कछुआ बोलने को हुआ / पानी में जा गिरा।

---

5. **"ने कहा" और "बोला"**

कहानी में ढूँढो– जब किसी को कुछ कहना होता है तो बात से पहले क्या लिखा होता है।

जैसे – कछुए ने *कहा* – दैया रे! कितना ऊँचा है तुम्हारा घर।

बगुलों ----------

कछुए ----------

कछुआ *बोला* – हाँ, हाँ, मैं कुछ भी करने के लिए तैयार हूँ।

एक	कई	एक	कई
कछुए ने कहा	कछुओं ने कहा	कछुआ बोला	कछुए बोले
बगुले ने कहा	बगुलों ने कहा	बगुला बोला	बगुले बोले
मछली ने कहा	मछलियों ने कहा	मछली ---	मछलियाँ बोली
साँप ने कहा	साँपों ने कहा	साँप ----	---------
मेंढक ने कहा	--- ने कहा	मेंढक----	---------
चिड़िया ने कहा	--- ने कहा	चिड़िया---	---------
लड़के ने कहा	---- ने कहा	लड़का---	---------
लड़की ने कहा	--- ने कहा	------	---------
बूढ़े ने कहा	------	------	---------
-----	-------	-------	---------
-----	-------	-------	---------

6. **यहाँ जो गहरे लिखे शब्द हैं वह हर वाक्य में किसी के बारे में कुछ बता रहे हैं**

कछुए ने मछलियों से कहा– दैया रे! तुम तो बहुत **सुनहरी** और **चौड़ी** सी लग रही हो।

जरूर ये **लंबी–लंबी** घासों का ही कमाल है। (घास के बारे में)

दैया रे! कितने **सुन्दर** हैं ये कमल के फूल। (कमल के फूलों के बारे में)

दैया रे! कितना **ऊँचा** है तुम्हारा घर। (घर के बारे में)

विशेषण किसी चीज़ की विशेषता या खास बात बताते हैं। जैसे इन वाक्यों में सुनहरी, चौड़ी, लंबी–लंबी, सुन्दर, ऊँचा इन शब्दों को **विशेषण** कहेंगे। कहानी में से ऐसे और शब्द छाँटो और लिखो कि किस के बारे में बता रहे हैं।

क्या कहा	*किसके बारे में*	*क्या कहा*	*किसके बारे में*
सुनहरी	मछली	-------	-------
लंबी–लंबी	घास	-------	-------
------	------	-------	-------
------	------	-------	-------

एक आम पर ...

डाल पे उलटे लटके बच्चे,
तोड़ रहे थे आम वो कच्चे।
लगा पेड़ पर था, एक छत्ता,
गिरा टूटकर उस पर पत्ता।
उड़ी मक्खियाँ काली–काली,
डर गए बच्चे छूटी डाली।
बच्चे नीचे गिरे धड़ाम,
रह गए लटके कच्चे आम।

अब इन प्रश्नों के उत्तर दो–

1. बच्चे आम कैसे तोड़ रहे थे? ----------

---

2. उनके हाथ से डाली क्यों छूटी? ----------

---

3. इस कविता की यह लाइन देखो। इसे हम कई तरह से लिख सकते हैं:–

रह गए लटके कच्चे आम,

कच्चे आम लटके रह गए,
रह गए कच्चे आम लटके,
लटके रह गए कच्चे आम.....आदि।

अब तुम कविता की कोई और लाइन लो और ऐसा ही करो।

---

4. अगर मैं कहूँ 'कच्चे रह गए लटके आम' तो भी क्या मतलब वही रहेगा? क्यों? सोचो, चर्चा करो।

५ कविता की पारा की जगह में इस कविता के लिए चित्र बनाओ जिसमें कविता में कही गई बातें दिखाई दें।

6. इस कविता को कहानी की तरह लिखो।

कहानी बनाओ।

एक बार हाथी ने चूहे को खाने पर बुलाया। खाने में तरह–तरह के फल और बीज थे। दोनों ने पेट भर खाया। अब दोनों को प्यास लगी। वे कुएँ पर गए। कुएँ पर ररसी बाल्टी तो थी नहीं। हाथी बोला कोई बात नहीं। उसने अपनी सूँड कुएँ में लटकाई। फिर सूँड में पानी भरकर चूहे को पिलाया। दोनों वापस अपने–अपने घर गए।

अब तुम भी इन शब्दों को मिलाकर कहानी बनाओ।

कहानी –1 गिलहरी, बस्ता, स्कूल, खरगोश। कहानी –2 बैलगाडी, नदी, झूला, डंडा।

अधूरी कहानी पूरी करो।

गाँव में कोई भी रात के बाद बूढ़े बरगद के पास नहीं जाता था। बब्लू की माँ भी उसे वहाँ सूरज ढलने के बाद जाने न देती। आखिर क्यों? बब्लू हमेशा सोचता रहता। एक रात वह नजर बचाकर बूढ़े बरगद के पास पहुँच ही गया। अँधेरा होने ही वाला था। उसने देखा